कर अनन्य भाव से उन (श्रीकृष्ण) के ही शरणागत हो जाय। इस शरणागति से वह सब पापों से बच जायगा, क्योंकि श्रीभगवान् स्वयं उसकी रक्षा करने का वचन देते हैं।

सातवें अध्याय में उल्लेख है कि भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना में वही लग सकता है, जो सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो गया हो। इससे जीव को यह ग्लानि हो सकती है कि जब तक वह सब पापों से छूट नहीं जाता, जब तक शरणागति के पथ को अंगीकार नहीं कर सकता। ऐसे सन्देह को दूर करने के लिए भगवान् ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि कोई पापों से न छूटा हो, तो भी केवल श्रीकृष्ण के शरणागत हो जाने से उसका अपने-आप मोचन हो जायगा। ऐसे में पाप-निवृत्ति के लिए अलग से कोई कठोर उद्यम नहीं करना पड़ेगा। श्रीकृष्ण को निस्संकोच सम्पूर्ण जीवों का परम शरणदाता मान कर श्रद्धा और प्रेमभाव से उनके शरणागत हो जाना चाहिये।

भक्तियोग की पद्धति के अनुसार, उसी विधि-नियम को मानना चाहिए, जो भक्तियोग की प्राप्ति में सहायक हो। वर्ण-आश्रम में अपनी स्थिति के अनुसार स्वधर्म-पालन किया जा सकता है; परन्तु यदि कोई इस प्रकार के कर्तव्य-पालन से कृष्णभावनारूपी लक्ष्य तक नहीं पहुँचे, तो उसके सम्पूर्ण कर्म व्यर्थ हैं। जो कर्म कृष्णभावनारूपी परमसिद्धि के मार्ग में अग्रसर नहीं करता, उससे बचना चाहिए। यह दृढ़ विश्वास रखे कि श्रीकृष्ण सब परिस्थितियों में उसकी सब प्रकार से रक्षा करेंगे। प्राण-धारण के लिए चिन्ता करना अनावश्यक है। इसकी चिन्ता श्रीकृष्ण करेंगे। अपने को सदा दीन-हीन अनुभव करता हुआ श्रीकृष्ण को ही जीवन में उन्नति का अनन्य अवलम्ब समझे। कृष्णभावनाभावित होकर निश्छल भाव से भक्तियोग के परायण होते ही माया के सम्पूर्ण दोषों से मुक्ति हो जाती है। ज्ञान, ध्यानयोग आदि धर्म और शुद्धिकरण की अनेक पद्धतियाँ हैं, परन्तु श्रीकृष्ण के शरणागत को इन साधनों का अनुष्ठान नहीं करना पड़ता। श्रीकृष्ण के चरणों में अनन्य शरणागति ही पर्याप्त है; अन्य साधनों में समय व्यय करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार एक शरणागति के द्वारा तत्काल पूर्ण उन्नति करके सम्पूर्ण पापों से मुक्त हुआ जा सकता है।

श्रीकृष्ण की मधुर छवि पर मुग्ध हो जाय। उनका नाम कृष्ण है, क्योंकि वे सर्वाकर्षक हैं। जो श्रीकृष्ण के मधुर सर्वशक्तिसम्पन्न रूप की ओर आकृष्ट हो जाता है, वह भाग्यवान् है। निर्विशेषब्रह्मवादी, परमात्मावादी आदि योगियों की अनेक कोटियाँ हैं। परन्तु जो श्रीभगवान् के साकार रूप, विशेषतः साक्षात् श्रीकृष्ण की ओर आकृष्ट होता है, वही परम योगी है। भाव यह है कि पूर्ण कृष्णभावनाभावित भक्तियोग परम गोपनीय ज्ञान और सम्पूर्ण भगवद्गीता का सार-सर्वस्व है। कर्मयोगी, ज्ञानी, ध्यानी और भक्त—सभी योगी कहलाते हैं। परन्तु इस सबमें शुद्धभक्त सर्वोत्तम है। **मा शुचः** पद का विशिष्ट गूढ़ार्थ है। श्रीकृष्ण अर्जुन को आश्वासन दे रहे हैं, "हे अर्जुन! तू शोक मत कर, चिन्ता मत कर, भय मत कर।" चिन्ता हो सकती है कि सब प्रकार के धर्मों को त्याग कर अनन्यभाव से श्रीकृष्ण के शरणागत